

श्री

श्रीमान्, शयकहाडू, धर्मवीर, सेठ-चम्पालाल जी की
लेखके सादा समर्पण

श्री सुत महाजन्मवन्त हैं, अक्षय गुणों की धारक हैं,
मानभवत्, ^{श्री साग} ~~तुम ही सुत~~, सब से ^{मिल} ~~हुआ~~ सम्मान हैं।
रा ^{दुसी} ~~हु~~ प्रवृत्तियां, सारी ^{मोह} ~~मोह~~ की आपने,
यत्न नित ही धर्म का, जग में किया है, आपके ॥१॥
व ^{लक्ष्म} ~~लक्ष्म~~ किया स्वीकार है, सम्पूर्ण ही लेता है,
हा र मानी है इसी से, जगत विजयी काजने।
दु ^{दो} ~~दो~~ इन्द्रिय के शरीरों, जीत जाला आपने,
इ ^{का} ~~का~~ सदा परकी करी, निज का सम्झके आपने ॥२॥
धर्म के शतका ^{जु} ~~जु~~ ^{अभि} ~~अभि~~, तन मन लगाकर नित्य है,
वी र है, वखधीर है, गम्भीर, कसणा मूर्ख है।
र खते लकी का ध्यान है, काले स्वयं वृष काम है,
सो ^{वै} ~~वै~~ के तो लिए, चिन्ता मठगे अभिरुध है ॥३॥
ठ ग-जो ^{लक्ष्म} ~~लक्ष्म~~ का आपको, दगला स्वयं तन देत है।
नै ^{चलो} ~~चलो~~ लक्ष्मी इसी से, हुई अचला आप है ॥
जा की अमोलक ^{स्व} ~~स्व~~ सख धन्य कहते आपको,
लो ^{लक्ष्मी} ~~लक्ष्मी~~ रहनी यही, पूजे सदा ही आपको ॥५॥
ल ^{क्ष्मी} ~~क्ष्मी~~ हुई दासी लुम्हारे, दान से तुम वश करी,
जी ^{वका} ~~वका~~ रिपुका सोर, कीचि अपनी जगभरी।
दु ^{जी} ~~जी~~ जिए अख कृपा ऐसी, धर्मकी सन्नाति कदे,
सो ^{वा} ~~वा~~ सदन तुव सदन हो, यश के लिभू रह पाये ॥५॥
मो ^ल ~~ल~~ सम मो धर्ममय, जीवनसाल अति आपका,
मो ^ठ ~~ठ~~ ते नित हीव पजे, समझ कहे आपका।
सा ^{दर} ~~दर~~ समर्पण, ^{कर} ~~कर~~ रहा यह भेट, कालक आपको,
स्वी ^{कार} ~~कार~~ कर रहे सात ^{मे} ~~मे~~, हो सख सन्तोष को।

श्रीमती लाल, मोनो लाल, शक्ति और सुन्दर लाल,
ही ० लाल, पन्ना लाल, गणेश जी कुमार हैं।
अच्छे कुमारे रहे जय कुमार, जा सुनार,
आठ उत्र भाठ ही दि सम, सुख धारण हैं।
प्रीतम हैं प्रियतम, कानि चढ़ ~~सद~~ सम,
सज्जन कुमारे अति सज्जन ^{कुमार} ~~कुमार~~ हैं, देवेंद्र
इत्यादि काला कालेकार्य हैं इव ^{सुख} ~~सुख~~ रहे,
सुखी, चिज्जीवि, मश जी दि श्रीमान् हैं ॥

देवेंद्र